पॉकेट डायरी: 24X7 लर्निंग

(Pocket Diary: 24X7 Learning)

श्री करनपाल सिंह (सहायक अध्यापक)
उच्च प्राथमिक विद्यालय शेरनी (1-8), विकास खण्ड – राया,
जनपद – मथुरा, उत्तर प्रदेश

उद्देश्य –

वर्ष 2023 में शिक्षक ने विद्यालय (उ.प्रा.वि. शेरनी (1-8), मथुरा) में एक अनुभव किया कि प्राथमिक स्तर के विद्यार्थी नियमित रूप से गृहकार्य (Homework) करके नहीं आ रहे थे। इसके अतिरिक्त, यदि कोई शिक्षक किसी विभागीय या प्रशासनिक कार्य में व्यस्त होता, तो उस दौरान विद्यार्थी स्व-पठन (Self-reading) न करके अनुशासनहीनता करते थे। एक और विरोधाभास यह देखा गया कि कई विद्यार्थी प्रात: ही विद्यालय के नियत समय से पूर्व आकर कक्षा-कक्ष के बाहर या भीतर बैठकर अपना अधूरा गृहकार्य शीघ्रता में पूरा करने का प्रयास करते थे।

इस समस्या की गहराई में जाकर विद्यार्थियों से आत्मीय संवाद स्थापित किया, तो एक बहुत ही संवेदनशील व्यावहारिक सत्य सामने आया कि ग्रामीण परिवेश से आने के कारण, विद्यार्थी विद्यालय से घर लौटते ही अपना भारी-भरकम स्कूल बैग एक कोने में रख देते थे। इसके बाद, वे या तो अपने माता-पिता के साथ खेतों में काम करने चले जाते थे या मित्रों के साथ खेलने निकल जाते थे। देर शाम जब वे घर लौटते, तो ग्रामीण अंचलों में बिजली की अनियमितता, प्रकाश के पर्याप्त साधनों की कमी और अत्यधिक थकान के कारण वे पढ़ने नहीं बैठ पाते थे। इस प्रकार, विद्यालय के छह घंटों के बाद घर पर पढ़ाई का एक बड़ा अंतराल (Learning Gap) निर्मित हो रहा था।

लंबे समय तक इस समस्या का कोई व्यावहारिक और न्यून-लागत समाधान ढूंढने के दौरान, एक बस यात्रा ने शिक्षक को इस नवाचार की राह दिखाई। सफर के दौरान शिक्षक ने देखा कि उनके सामने बैठी एक वृद्ध महिला (दादी माँ) ने अपने छोटे से पर्स में से एक छोटी सी पुस्तिका निकाली और सहजता से पढ़ने लगीं। ध्यान से देखने पर पता चला कि वह 'दुर्गा चालीसा' थी।

इस दृश्य ने शिक्षक के भीतर अन्तर्मन में एक नव विचार को जन्म दिया। शिक्षक ने सोचा कि यदि आस्था और दैनिक पाठ के लिए एक छोटी, सुगम और जेब में समा जाने वाली पुस्तिका इतनी प्रभावी हो सकती है, तो बच्चों की शिक्षा के लिए ऐसा क्यों नहीं किया जा सकता?

(पॉकेट डायरी के साथ बच्चे)

क्यों न हम शिक्षा को विद्यार्थियों की जेब (Pocket) तक पहुंचा दें, एक ऐसी शिक्षण सामग्री, जो विद्यार्थी के साथ हर जगह जा सके चाहे वह खेत पर माता-पिता की मदद कर रहे हो या किसी रिश्तेदारी में गये हो। इसी विचार से 'पॉकेट डायरी' नवाचार का उद्गम हुआ।

क्रियान्वयन –

शिक्षक ने एक ऐसी सूक्ष्म पुस्तक का प्रारूप तैयार किया जिसमें विद्यार्थियों के सीखने के लिए मूलभूत और आवश्यक पाठ्य सामग्री है। इसके स्वरूप को अत्यंत आकर्षक, रंग-बिरंगा और चित्रों से सुसज्जित किया गया ताकि विद्यार्थी इसकी ओर सहज आकर्षित हों। उदाहरण के लिए, अंग्रेजी वर्णमाला के साथ एक-एक अर्थपूर्ण शब्द (Meaning), उसका हिंदी अनुवाद और साथ में सजीव चित्र रखे गए।

यद्यपि यह 'पॉकेट डायरी' नवाचार प्राथमिक स्तर पर मुख्य रूप से कक्षा 1 से 3 के विद्यार्थियों (FLN लक्षित वर्ग) के लिए सर्वाधिक प्रभावी है, तथापि विद्यालय के अन्य विद्यार्थियों की सहज जिज्ञासा और सीखने की ललक को देखते हुए शिक्षक ने इसे कक्षा 1 से 5 तक के सभी बच्चों को पूर्णतः निःशुल्क उपलब्ध कराया। इसका मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों के बीच उत्पन्न हो रहे 'लर्निंग गैप' (Learning Gap) को समाप्त करना और उनमें 'स्व-पठन' (Self-Reading) की आदत को स्थायी रूप से विकसित करना है।

(पॉकेट डायरी के चित्र)

प्रत्येक विद्यार्थी को उनकी अपनी व्यक्तिगत पॉकेट डायरी दी गई, जिसे वे सदैव अपने पास रखते हैं। घर से बाहर जाते समय यह डायरी उनकी जेब में होती है। खेत पर काम के बीच मिले अंतराल में या खेल पश्चात, जब भी समय मिलता है, विद्यार्थी इसे निकालकर पढ़ने लगते हैं। शुरुआत में जब विद्यार्थियों को यह नई और सुंदर सामग्री मिली तो वे इसे केवल एक खिलौने की तरह अपने परिवार, आस-पड़ोस और दोस्तों को गर्व से दिखाने लगे। इसी 'दिखाने' की प्रक्रिया में अनजाने में उनका अनौपचारिक दोहराव होने लगा और खेल-खेल में उन्होंने कठिन शब्द व पहाड़े याद कर लिए। विद्यालय में मध्याह्न भोजन (Mid-day Meal) के समय जब शिक्षक ने विद्यार्थियों को खेलते समय पॉकेट डायरी से पढ़ते देखा, तब उन्हें विश्वास हुआ कि यह नवाचार 'स्व-पठन' की आदत को विकसित करने में पूर्णतः सफल रहा है। पॉकेट डायरी के कुछ सेट विद्यालय के 'रीडिंग कॉर्नर' (Reading Corner) और लाइब्रेरी में रखे गए हैं। जब भी कोई शिक्षक प्रशासनिक कार्य में व्यस्त होता है तब बच्चे स्वतः रीडिंग कॉर्नर से अपनी मनपसंद पॉकेट डायरी निकालकर पढ़ने बैठ जाते हैं।

(छोटे बच्चे पॉकेट डायरी से पढ़ते हुए)

विद्यार्थियों की बहुआयामी रुचि, FLN दक्षताओं और सामान्य ज्ञान के विकास हेतु कुल 10 पॉकेट डायरियों का निर्माण किया गया है-

1. हिंदी मात्राओं की डायरी: 'अ' से 'अं' तक की सभी हिंदी मात्राओं का सचित्र परिचय एवं उनसे निर्मित समृद्ध शब्द-भंडार।

2. अंग्रेजी सीखें मजे से : 'A' से 'Z' तक प्रत्येक वर्ण (Alphabet) से संबंधित शब्द, उसका हिंदी अर्थ एवं आकर्षक रंगीन चित्र।
3. कंप्यूटर के भाग : कंप्यूटर के प्रमुख हार्डवेयर घटकों के सजीव चित्र, उनके नाम एवं उनके मुख्य कार्यों का सरल वर्णन।
4. पक्षियों की दुनिया : प्रमुख स्थानीय व अन्य पक्षियों के हिंदी व अंग्रेजी नाम एवं उनके आकर्षक चित्र।
5. पालतू जानवरों के नाम : दैनिक जीवन में दिखने वाले पालतू पशुओं के द्विभाषी (हिंदी व अंग्रेजी) नाम और उनसे संबंधित चित्र।
6. जंगली जानवरों की दुनिया : विभिन्न जंगली जीवों के चित्र तथा उनके हिंदी व अंग्रेजी नाम।
7. स्वच्छता के नियम : दैनिक व्यक्तिगत स्वच्छता (जैसे हाथ धोना, दांत साफ करना) के नियमों का चित्रों द्वारा बाल-सुलभ प्रदर्शन।
8. जीके फॉर किड्स : बच्चों के आयुनुसार सामान्य ज्ञान के प्रश्नोत्तर, जिन्हें समझने के लिए सचित्र उत्तर प्रस्तुत किए गए हैं।
9. नौ ग्रहों की दुनिया : सौरमंडल के ग्रहों के नाम (हिंदी व अंग्रेजी में), उनके चित्र तथा उनसे जुड़ी रोचक बुनियादी जानकारियाँ।
10. पहाड़े पॉकेट डायरी : गणितीय दक्षता के लिए संख्यात्मक पहाड़े, जिससे बच्चे खेल-खेल में गणना कर सकें।

(पॉकेट डायरी के चित्र)

प्रभाव –

यह न्यून निवेश नवाचार 'मिशन निपुण भारत' के बुनियादी साक्षरता एवं संख्याज्ञान (FLN) लक्ष्यों की प्राप्ति में मील का पत्थर साबित हो रहा है, जिसके माध्यम से बच्चे खेल-खेल में अत्यंत सहज, सरल और मनोरंजक तरीके से निपुण दक्षताओं को हासिल कर रहे हैं। पॉकेट डायरी के प्रभावी क्रियान्वयन का सुखद परिणाम है कि शिक्षक का विद्यालय 'निपुण विद्यालय' घोषित हुआ है और यह इस नवाचार की प्रामाणिकता को दर्शाता है कि 'पॉकेट डायरी' का नियमित व प्रभावी संचालन किया जा रहा है। इस नवाचार के निरंतर प्रयोग से विद्यार्थियों में 'स्व-पठन' (Self-reading) और सहकर्मी अधिगम (Peer Learning) की स्वाभाविक आदत विकसित हुई है, जिससे वे विद्यालय के 'रीडिंग कॉर्नर' व लाइब्रेरी का उत्सुकतापूर्वक उपयोग करने लगे हैं।यह पॉकेट डायरी नवाचार न केवल 'मिशन निपुण भारत' के बुनियादी साक्षरता एवं संख्याज्ञान (FLN) लक्ष्यों की प्राप्ति में अत्यंत सहायक सिद्ध हो रहा है, बल्कि इसके माध्यम से विद्यार्थी अपनी आयु के अनुकूल सामान्य ज्ञान और अपने सजीव स्थानीय वातावरण की उपयोगी जानकारियों को भी सहजता से आत्मसात कर रहे हैं। इसके साथ ही डायरी में समाहित विषय-वस्तु के ज़रिए

बच्चे भविष्य की आवश्यकता सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी (ICT) व आधुनिक डिजिटल अवधारणाओं से बाल-सुलभ तरीके से रूबरू हो रहे हैं।

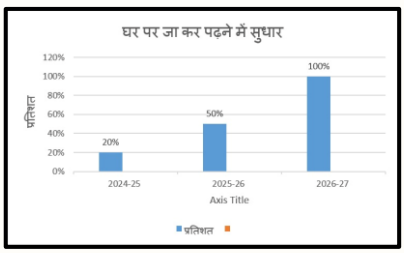

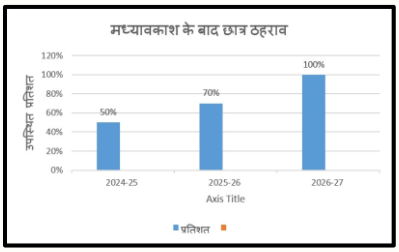

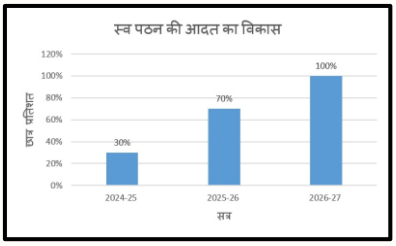

स्व-पठन की आदत का विकास का मूल्यांकन दो प्राथमिक आधारों पर किया गया। पहला, छात्रों द्वारा नियमित रूप से गृहकार्य पूर्ण करके लाना और दूसरा, कक्षा में अध्यापक के प्रशासनिक कार्यों में व्यस्त होने पर छात्रों द्वारा बिना व्यवधान डाले स्वयं पाठ्यपुस्तकों का अध्ययन करना। पूर्व में मध्यावकाश (MDM) के बाद बच्चे भोजन करके घर चले जाते थे और उत्तरार्द्ध में उपस्थिति घट जाती थी। रोचक शिक्षण विधियों व सह-शैक्षणिक गतिविधियों के माध्यम से बच्चों में विद्यालय के प्रति आकर्षण बढ़ाया गया। हर माह आयोजित होने वाली शिक्षक-अभिभावक बैठक (PTM) में अभिभावकों से प्राप्त प्रत्यक्ष फीडबैक के आधार पर बच्चों के घर पर जाकर पढ़ने में सुधार का डेटा तैयार किया गया।

उपलब्धि

इस नवाचार का विस्तार जनपद की सीमाओं के बाहर भी हुआ है, जहाँ विभिन्न जनपदों के 500 से अधिक विद्यालयों के अनेक अध्यापकों ने इसे सहर्ष अपनाया है और उनके द्वारा दिए गए सकारात्मक फीडबैक यह सिद्ध करता है कि यह पॉकेट डायरी बच्चों को तीव्र गति से और स्थायी रूप से 'निपुण' बनाने में अत्यधिक मददगार एवं क्रांतिकारी साधन साबित हो रही है

"शिक्षा केवल विद्यालय की चाहरदीवारी या स्कूल बैग तक सीमित नहीं होनी चाहिए, वह बच्चों की पहुँच तक होनी चाहिए।"